REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2024

रहीम के काव्य में रसमयता का समन्वय

आकांक्षा सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग
पंडित एस.एन. शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

डॉ. आरती झा
सेवानिवृत्त प्राध्यापक हिन्दी
पंडित एस.एन. शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

रहीम के काव्य में रसमयता का समन्वय उनकी रचनाओं को विशेष और प्रभावशाली बनाता है। उनके काव्य में भावनात्मक गहराई, उपमा और अलंकारों का कुशल प्रयोग, आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण, साधारण जीवन की छवियाँ और भक्ति व प्रेम की अभिव्यक्ति शामिल हैं। ये सभी तत्व मिलकर रहीम की कविताओं को रसपूर्ण और संवेदनशील बनाते हैं। उनके काव्य में जीवन के विविध पहलुओं को सरल और सशक्त तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, जो पाठकों को गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।

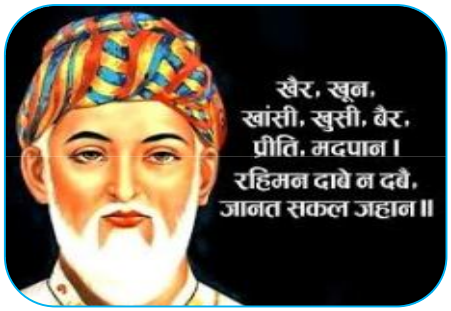

मुख्य शब्द – रहीम के काव्य, रसमयता एवं समन्वय।

प्रस्तावना –

रहीम, जिनका पूरा नाम रहीम खानखाना था, हिंदी साहित्य के अनमोल रत्नों में से एक हैं। उनका काव्य संसार, जो मुख्यतः सुभाषितों और दोहों के रूप में प्रकट हुआ है, भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी रचनाओं में बसी रसमयता, जो उनकी काव्यशक्ति का अभिन्न हिस्सा है, न केवल उनकी व्यक्तिगत कला का प्रमाण है, बल्कि भारतीय साहित्य की एक अमूल्य धरोहर भी है। रहीम का काव्य एक ऐसा साधन है जिससे वे अपनी समय की सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं और यही उनके काव्य की विशिष्टता का मुख्य कारण है। रहीम की कविताओं में रसमयता का समन्वय एक जटिल लेकिन अद्वितीय पहलू है, जो उनके काव्य की गहराई और व्यापकता को उजागर करता है। यह समन्वय न केवल उनकी कविताओं के भावनात्मक और दार्शनिक पहलुओं को प्रकट करता है, बल्कि उनके समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की झलक भी प्रदान करता है। रहीम के काव्य में रसमयता का यह समन्वय उनके साहित्यिक कौशल और सूफी भक्ति परंपरा के प्रभाव का परिणाम है।

रहीम का काव्य, विशेषतः उनके दोहे और सुभाषित, एक अद्वितीय काव्यशैली को प्रकट करते हैं जो कि रस और भावनाओं की गहराई से भरी हुई है। उनका काव्य शास्त्रीय काव्यशास्त्र की मौलिकताओं को अपनाते हुए भी एक विशेष रस की पहचान बनाता है। उनका काव्य एक तरफ जहाँ पारंपरिक काव्यशास्त्र से जुड़ा है, वहीं दूसरी ओर यह उनके व्यक्तिगत अनुभव और विचारों की अनूठी अभिव्यक्ति भी है। रहीम के काव्य में रस की उपस्थिति उनकी कविताओं के विविध भावनात्मक और संवेदनात्मक रंगों को प्रकट करती है। उनकी

कविताओं में प्रेम, भक्ति, विरह और जीवन के अन्य पहलुओं की गहरी छवियाँ मिलती हैं, जो पाठक को एक सहज और गहन अनुभव प्रदान करती हैं। यह रस और भावनाओं का समन्वय रहीम की काव्यशक्ति को विशेष बनाता है और उनके साहित्यिक योगदान को महत्वपूर्ण बनाता है।

रहीम की कविताओं में भावनात्मक गहराई एक महत्वपूर्ण तत्व है। उनके द्वारा व्यक्त किए गए भावनाएँ और संवेदनाएँ पाठकों को गहराई से छूने वाली होती हैं। यह भावनात्मक गहराई उनके काव्य की रसमयता को बढ़ाती है और पाठकों को उनके अनुभवों से जोड़ती है। रहीम की कविताओं में प्रेम, भक्ति, और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं की गहरी और सारगर्भित अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक के मन को छूने वाली होती है। उनके दोहे और सुभाषित न केवल भक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं, बल्कि जीवन की जटिलताओं और दार्शनिक प्रश्नों पर भी प्रकाश डालते हैं। यह भावनात्मक गहराई उनके काव्य की विशिष्टता को दर्शाती है और पाठक को एक गहरे मनोवैज्ञानिक अनुभव की ओर ले जाती है।

रहीम की कविताओं में उपमा, अनुपमा और अन्य अलंकारों का प्रयोग उनकी रचनात्मकता और काव्यशास्त्र के प्रति उनकी गहरी समझ को प्रकट करता है। अलंकारों का यह प्रयोग उनकी कविताओं को रसपूर्ण और आकर्षक बनाता है। उपमा और अन्य अलंकार उनके काव्य को भावनात्मक और साहित्यिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाते हैं और पाठकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं। रहीम का काव्य अलंकारों की विविधता और उनके उपयोग की कला को प्रदर्शित करता है। यह अलंकार केवल काव्य की सुंदरता को बढ़ाते नहीं, बल्कि भावनाओं और विचारों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, उपमा और अलंकारों का प्रयोग रहीम की कविताओं की रसमयता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

रहीम के काव्य में सूफी दृष्टिकोण और आध्यात्मिकता की झलक मिलती है। वे जीवन की क्षणिकता, मोह और माया पर गहरा विचार करते हैं और इसे सरल और सारगर्भित ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक चिंतन उनके काव्य को एक गहरा और प्रभावशाली आयाम प्रदान करते हैं। रहीम का काव्य सूफी परंपरा के अंतर्गत आता है, जो प्रेम, भक्ति और आत्मा की खोज पर आधारित है। यह दृष्टिकोण उनके काव्य को आध्यात्मिक गहराई और दार्शनिकता का रंग प्रदान करता है। उनके दोहे और सुभाषित आध्यात्मिक तत्वों को सरलता और गहराई से प्रस्तुत करते हैं, जो पाठकों को जीवन की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

रहीम की कविताओं में साधारण जीवन की घटनाएँ और स्थितियाँ उनकी रचनात्मकता और संवेदनशीलता का प्रमाण हैं। वे जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं और अनुभवों को कवि की दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं, जो पाठकों को सहजता और निकटता का अनुभव कराते हैं। यह साधारण जीवन की छवियाँ उनकी कविताओं को वास्तविकता और प्रासंगिकता का रंग देती हैं। रहीम की कविताओं में घर, परिवार, समाज, और अन्य सामान्य जीवन के पहलुओं की झलक मिलती है, जो उनके काव्य को एक सजीव और समृद्ध अनुभव बनाती है। इन छवियों के माध्यम से वे जीवन की वास्तविकताओं को कला के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो पाठकों को गहरे विचार और अनुभव प्रदान करते हैं।

रहीम के काव्य में भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनकी कविताओं में भगवान और गुरु के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम को व्यक्त किया गया है। यह भक्ति और प्रेम उनकी कविताओं को भावनात्मक और रसपूर्ण बनाते हैं और पाठकों को एक गहरी आध्यात्मिक संवेदना प्रदान करते हैं। रहीम का भक्ति और प्रेम का दृष्टिकोण उनके काव्य को विशेष बनाता है। उनकी कविताओं में प्रेम और भक्ति की गहरी भावनाएँ और अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जो उनके साहित्यिक योगदान को महत्वपूर्ण बनाती हैं। यह भक्ति और प्रेम पाठकों को एक गहन भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करते हैं।

विश्लेषण –

रहीम की कविताएँ, विशेष रूप से उनके दोहे और सुभाषित, उनके समय की सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक संवेदनाओं का सार हैं। हम विभिन्न दृष्टिकोणों से उनके काव्य की रसमयता को समझने की कोशिश करेंगे।

1. भावनात्मक गहराई और मनोवैज्ञानिक प्रभाव – रहीम की कविताओं में भावनात्मक गहराई उनकी रचनाओं की आत्मा है। उनकी कविताएँ प्रेम, भक्ति और जीवन के अन्य पहलुओं को अत्यंत सजीव और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती हैं। उदाहरण के लिए, रहीम का प्रसिद्ध दोहा–

'रहीम न देखे लाखन, जो देखा एक ही बार।'
'नैनों के दरस तौ, सखा हंसौ, देखे पार का पार।'

इस दोहे में रहीम ने आँखों के दर्शन की महत्वता को व्यक्त किया है, जहाँ एक बार की नजर भी अनमोल होती है। यह भावना पाठक के मन को छूने वाली है और इस प्रकार की भावनात्मक गहराई काव्य में रस की समन्वयता को प्रकट करती है।

रहीम की कविताओं में प्रेम, भक्ति और जीवन के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति, मानसिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा करती है। उनकी कविताएँ पाठक को गहरे भावनात्मक अनुभव की ओर ले जाती हैं और इस प्रकार की भावनात्मक गहराई काव्य के रस को बढ़ाती है।

2. उपमा और अलंकारों का प्रयोग –

रहीम के काव्य में उपमा, अनुपमा और अन्य अलंकारों का प्रयोग उनकी रचनात्मकता और काव्यशास्त्र की समझ को दर्शाता है। उपमा और अनुपमा जैसे अलंकार उनकी कविताओं को भावनात्मक और साहित्यिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाते हैं। उदाहरण के लिए –

'मोरी बटन भरी लागे, बटन भी गड़िले।'
'रहीम लछमिन जी तसि, आचरन सजत सहीले।'

इस उदाहरण में, रहीम ने बटन और सजावट की उपमा के माध्यम से आचार–विचार की स्थिति को स्पष्ट किया है। यह अलंकार केवल काव्य की सुंदरता को बढ़ाता नहीं, बल्कि पाठक को गहरे भावनात्मक और विचारात्मक अनुभव भी प्रदान करता है। रहीम के काव्य में अलंकारों का प्रयोग न केवल काव्य की लय और ताल को बढ़ाता है, बल्कि यह भावनाओं और विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। उपमा और अलंकारों का यह समन्वय काव्य के रस को बढ़ाता है और पाठकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है।

3. आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण –

रहीम की कविताओं में सूफी दृष्टिकोण और आध्यात्मिकता की झलक मिलती है। वे जीवन की क्षणिकता, मोह और माया पर गहरे विचार करते हैं और इसे सरलता और गहराई से प्रस्तुत करते हैं। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक चिंतन उनके काव्य को गहरा और प्रभावशाली बनाते हैं। रहीम का सूफी दृष्टिकोण उनके काव्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे भक्ति और प्रेम के माध्यम से आत्मा की खोज और ईश्वर के प्रति समर्पण को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार का आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण काव्य में एक गहरी भावनात्मक और चिंतनशीलता का समन्वय प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, उनका एक प्रसिद्ध दोहा है –

'सुखिया सब संसार है, दुखिया दीन दयाल।'
'रहीम निज दुःख गहिया, जे सुखी आहिं लाल।'

इस दोहे में, रहीम ने भौतिक सुख और दुःख के बीच के संबंध को समझाने की कोशिश की है और यह एक गहरी दार्शनिक समझ को दर्शाता है। उनकी कविताओं में आध्यात्मिकता और दार्शनिकता का यह समन्वय काव्य की गहराई को बढ़ाता है और पाठकों को जीवन की गहरी समझ प्रदान करता है।

4. साधारण जीवन की छवियाँ –

रहीम की कविताओं में साधारण जीवन की छवियाँ उनकी रचनात्मकता और संवेदनशीलता को प्रकट करती हैं। वे जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं और स्थितियों को कवि की दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं, जो पाठकों को सहजता और निकटता का अनुभव कराती हैं। रहीम का एक प्रसिद्ध दोहा इस बात को स्पष्ट करता है –

'बोलि परही तै काऊ, जावै लीन भा।'
'रहीम चुप रहौ सदा, उपजी न हिंसाक भा।'

इस दोहे में, रहीम ने चुप रहने और हिंसा से बचने की सलाह दी है, जो साधारण जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है। साधारण जीवन की ये छवियाँ काव्य को वास्तविकता और प्रासंगिकता का रंग देती हैं और पाठकों को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ती हैं।

5. भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति –

रहीम के काव्य में भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनकी कविताओं में भगवान और गुरु के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम को व्यक्त किया गया है। यह भक्ति और प्रेम उनकी कविताओं को भावनात्मक और रसपूर्ण बनाते हैं और पाठकों को एक गहरी आध्यात्मिक संवेदना प्रदान करते हैं। रहीम का भक्ति और प्रेम का दृष्टिकोण उनके काव्य को विशेष बनाता है। उनकी कविताओं में प्रेम और भक्ति की गहरी भावनाएँ और अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जो उनके साहित्यिक योगदान को महत्वपूर्ण बनाती हैं। यह भक्ति और प्रेम पाठकों को एक गहन भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए –

'कबहू निहारो जगत नाहि, नाहि फलु जीवन के।'
'रहीम भल पूरब ना दे, जो ना धरे भल बकरे।'

इस दोहे में, रहीम ने जीवन की अस्थिरता और भक्ति के महत्व को स्पष्ट किया है। भक्ति और प्रेम की यह अभिव्यक्ति उनके काव्य को गहराई और प्रभावशाली बनाती है।

किसी भी काव्य का स्वरुप ही रसात्मक होता है जैसे प्रसिद्ध विद्वान् विश्वनाथ ने लिखा है, "वाक्यं रसात्मक काव्यं" की यह उक्ति बहुत महत्वपूर्ण है क्योकि जब वाक्य रसमय होगा तो श्रोता या पाठक के हृदय में अनायास ही प्रभाव पैदा करेगा, रसमयता काव्य के गाहयता का प्रमुख आधार होता है। रस के कई अंग उपअंग हैं तथा उसके तत्वों का विवेचन करने से उसकी व्यापकता और उपादेयता का बोध होता है। जहाँ तक रहीम की काव्य प्रतिमा का प्रश्न है उन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओ में साहित्य की ग्राहयता के सभी गुण पर्याप्त मात्रा में भरे है। रसो की प्रमुख रूप से इस प्रकार गणना की गई है –

"श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक
वीमात्साद्भुत शान्तश्च काव्ये नव रसा स्मृता" ।।

यह काव्य में नौ रसो का वर्णन है प्रत्येक काव्य में किसी न किसी रूप में ये रस पाए जाते हैं, रहीम का काव्य अत्यन्त मनोहारी और प्रेरक है जिसमें भक्ति, नीति, प्रेम और जीवन व्यवहार के पक्षों को रेखाकित किया गया है। रहीम की कई रचनाएँ है जिनमें दोहावली नगर शोमा बरवै नायिका भेद, बरवै मदनाष्टक खेट कौतुकम के साथ श्रृंगार सोरठ सहित संस्कृत एवं फुटकर पद भी पाए जाते है जो अलग–अलग स्वरूपों में रसमयता से परिपूर्ण है जो अत्यन्त बोधगम्य एवं पाठकों के लिए प्रेरक शिक्षा प्रद एवं रुचिकर है। रहीम का सवेदनशील व्यक्तित्व जीवन के अनेक संघर्षों, राज व्यवस्था की जटिल क्रूरताओ और विरोधाभाषों के बावजूद अत्यन्त सजगता से अपनी रचनाओं को मनुष्यता के पावन गुणों से बचाए रखा –

कविता कहयो दोहा कहयो तुलै न छप्पय छन्द
किरच्यो यहै बिचार कै यह बरवै रस कन्द।।[1]

उन्होंने स्वंय ही वरवै को अन्य रचनाओं के मुकाबले रस से परिपूर्ण रस कन्द कहा है जबकि सभी रचनाओं में रसमयता का पर्याप्त समावेश किया गया है, रहीम ने नीतिपरक दोहे के साथ आध्यात्मिक पक्ष के भी रचनाकार रहे है, नगर शोभा की उनकी इन पंक्तियों में ईश्वर की विराट सत्ता को रेखांकित किया गया है –

आदि रूप की परम दुति घट घट रहा समाइ।
लघुमति ते मो मन रसन, अस्तुति कहीन जाई।।
नैन तृप्ति कछु होत है, निररिव जगत की भांति।
जाहि ताहि में पाइए आदि रूप की काँति।।[2]

सृजन विविध रूपों में चलता रहता है, हमारी प्राचीन परम्परा रही है हर नवीन अथवा सृजन के समय मंगलाचरण में कुछ पंक्तिया ईश्वर की प्रार्थना में समर्पित की जाती है। संम्भव है रहीम हमारी भारतीय संस्कृति की गंगा जमुनी तहजीब के अनुगायक रहे है तभी तो उन्होंने दोहावली के प्रारंभ में भी इसी भाँति कुछ पंक्तिया लिखी है। यथा–

"तै रहीम मन आपुनो कीन्हो चन्द चकोर।
निशिवासर लागो रहै, कृष्ण चन्द की ओर।।
अच्युत चरण तरंगिनी शिव सिर मालति माल।
हरि न बनायो सुरसरी कीजो इन्दव भाल।।"[3]

इस परम्परा का निर्वहन करते हुए नायिका भेद वरवै में श्रृंगार परक पदों में रसमयता का अद्भुत समावेश पाया जाता है –

मै पठ एउ जिही कसवा आए स साघ।
छुटिगा सीस को जुरवा कसि के बाँध।।[4]
मुहि तुहि हरवर आवत, भा पथ खेद ।
रहि रहि लेत उससवा, बहत प्रसेद।।[5]
होई कत आइ बदरिया बरखहिं पाथ।
जैसे धन अमर इया, सुगना साय।।[6]
जैहों चुनन कुसुमियाँ, खेत बड़ि दूर।
नौआ कैर छोहरिया मुहि सँग कूर।।[7]

काव्य के विविध स्वरूपों का निर्माण करते हुए रहीम स्वयं भी जीवन के कई मोर्चे पर संघर्ष कर रहे थे, एक व्यक्ति जो अनेक रूपों में समाज, राज सत्ता और परिवार के साथ जुड़े होने के बावजूद एक मुकम्मल आदमी अथवा यह कहे कि कवि किस प्रकार बचा रह गया जिसकी रचना का स्वरूप बहुआयामी था। समूचा वरवै जैसा रसकंद स्वयं रहीम ने स्वीकार किया है उसमे नायिका भेद के अत्यंत मोहक रूपों का वर्णन किया गया है जो अत्यंत मौलिक तत्व प्रेरणादायक है, जिसे पढ़ते हुए पाठक भाव विभोर होकर सुधबुध खो बैठते हैं। यथा–

छाकहु बैठ दुअरिया, मींजहु पाय।
पियतन पेखि गरमिया, विजन डोलाय।।[8]
चुपहोइ रहेउ सुन्देसवा, सुनि मुसकाय।
पियनिज कर बिछव नवा, दीन्ह उठाय।।[9]
विहसति मौह चढ़ाए धनुष मनीय।
लावत डर अबलनिया, उठि उठि पीय।।[10]

निष्कर्ष –

रहीम के काव्य में रसमयता का समन्वय उनकी काव्यशक्ति और साहित्यिक कौशल का अद्वितीय उदाहरण है। उनके काव्य में भावनात्मक गहराई, उपमा और अलंकारों का प्रयोग, आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण, साधारण जीवन की छवियाँ, और भक्ति एवं प्रेम की अभिव्यक्ति शामिल हैं। ये सभी तत्व मिलकर रहीम की कविताओं को रसपूर्ण और संवेदनशील बनाते हैं, जो पाठकों को गहरे अनुभव और विचार प्रदान करते हैं। रहीम का काव्य न केवल उनकी व्यक्तिगत कला का प्रमाण है, बल्कि भारतीय साहित्य की एक अमूल्य धरोहर भी है, जो सदियों से पाठकों को प्रभावित करती आ रही है।

संदर्भ –

[1] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली, पृष्ठ 83
[2] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली, 1 एवं 2 पद
[3] सं. वाग्देव – रहीम दोहावली पद 1 एवं 2, राजश्री प्रकाशन, दिल्ली
[4] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली वरवै नायिका भेद
[5] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली वरवै नायिका भेद
[6] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली वरवै नायिका भेद
[7] सं. विद्यानिवास मिश्र एवं गोविन्द रजनीश – रहीम ग्रंथावली वरवै नायिका भेद
[8] सं. सत्यप्रकाश मिश्र – वरवै नायिका भेद पद संख्या 117, रहीम रचनावली से उद्धृत
[9] सं. सत्यप्रकाश मिश्र – वरवै नायिका भेद पद संख्या 118, रहीम रचनावली से उद्धृत
[10] सं. सत्यप्रकाश मिश्र – वरवै नायिका भेद पद संख्या 119, रहीम रचनावली से उद्धृत